माने न बाँवरा जियरा

हाय माने नहीं बांवरा जियरा
मोहे तोरे मिलन की आशा

छुप छुप तुम से प्यार बढ़ाया जान गया जग सारा
लाज शरम का जो दृढ़ बन्धन नेह की धार पे वारा
बावरी बावरी लोग कहें मोहे भेष जोगन का धारा
बाँकी अदा से आय पकड़ लो अब तो हाथ हमारा
एक बने धड़कन दो दिल की।
बांध लयो भुज पाशा -- सांवरे...

छोड़ दिए व्रत नेम धर्म सभ छूट गई सब पूजा
तोसे लागा नेह सलोने आत न आखिन दूजा
गोकुल गांव के पैंडे चलदी और पंथ न सूझा
भानु दुलारी हाथ धरो शिर यह मग तुम्हरा भूझा
अनजाने उलझे बिखरे पथ
घेर न लेवे निराशा -- सावरे....

सूर नहीं नरसी नहीं नामा नहीं रविदास उदासी
मीरा नहीं मैं तो एक भिखारिन तुम्हरे दरस की प्यासी
पाञ्चाली नहीं ब्रज की गोपिका अधम पुष्चली दासी
बहुत जन्म की बिछुड़ी तुमसे हो न जाये अबके हांसी
भर दो अब तो रूप सुधा से
इन नयनन का कासा -- सांवरे...

साँवरिया चित चोर ग्वाले प्रेम नगर के राजा
रस के भरे अथाह समुन्दर एक ही बूँद पिला जा
झंकृत करदे मन की बीणा एक गीत ही गा जा
मैं भाऊ न भाऊ तुझको तू तो मुझको भा जा
रह न जाये यूं ही तड़पती
'हरि' की यह अभिलाषा -- सांवरे...

कवि : संकीर्तन सम्राट स्वामी श्री मुकुंद हरी जी महाराज
स्वर : विनोद अग्रवाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36922/title/mane-n-baanwra-jiyra

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |